

# श्रेणिक प्रवेध



श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर  
भट्टारकश्री सकलकीर्ति  
श्रुतभण्डार ईडर (गुजरात)

११९

---

शिवजीव प्रबन्ध

अथर्व

श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मंदिर, भट्टारकश्री सकलकीर्ति  
श्रुत भंडार ईडर-३८३६३० गुजरात(S.K.)

### ग्रन्थ परिचय-पत्र

मन्दिर/ग्रन्थ भण्डार का नाम		वेष्टन संख्या	२३
क्रम संख्या	१३४६	आकार से.मी.	२८ x २२
ग्रन्थ का नाम	श्री ठीक पुणेद्य	पत्र (पृष्ठ) संख्या	१८
ग्रन्थकार का नाम		पंक्ति अक्षर	१३ x २१
टीकाकार		रचनाकाल	
प्रतिलिपिकार		प्रतिलिपिकाल	
कागज/ताड़पत्र	डावाक्ष	पूर्ण/अपूर्ण	अपूर्ण
लिपि व भाषा	देव. हिन्दी	स्थिति : जीर्ण/अति जीर्ण/सामान्य	
गद्य/पद्य	पद्य		
विषय	सिद्धान्त		
विशेष विवरण			



नवाडीघणीचाहूचंदनचंपकतडी ॥ १० ॥ ~~...~~ ॥ ११ ॥ जायउष्य  
हृदयजाल ॥ जायफलजावत्रीबद्वमूल ॥ ~~...~~ ॥ १२ ॥ रमालतीसविंशुप ॥ १० ॥  
मदनवृहमदारसुचातिमनोहे रमोगरतिदत्तजाति ॥ बालोककुल ॥ ~~...~~ ॥ १३ ॥ वेजवडगुहीरंगार  
ल ॥ ११ ॥ राश्रामलीराजबृहह ॥ राजादनराजदंभीपुह ॥ कहरकेलिकलाउरुतिहाकसुनकेशरु  
धनजिहा ॥ १२ ॥ कमलकेतकीकरणीकला ॥ माः ॥ ~~...~~ ॥ १३ ॥ ह्यामधुकरगुजिमलीकपिचकप्रकदंबनातरु  
॥ कर्कटीकशामीदखहक ॥ १३ ॥ पामलपुग ॥ ~~...~~ ॥ १४ ॥ उन्नामपलाश ॥ कल्यादिमितमधुमास ॥ ल  
वगलिंबुइलालगुलाल ॥ नागरवन्धियत्र ॥ ~~...~~ ॥ १५ ॥ विमाल ॥ १४ ॥ नवलनालिकेरनारिया ॥ नलि  
नीनगसंपामीसंगश्रषोडश्रामलीडाखख ॥ ~~...~~ ॥ १५ ॥ हार ॥ वासुवहामवलिबीजधर ॥ १५ ॥ फरताफ  
णसफालसांवल ॥ जोतांउपतिनपामिमनः ॥ ~~...~~ ॥ १६ ॥ अमरखेचरनखनितावली ॥ जलक्रीडारसावलि  
मली ॥ १६ ॥ चुनिचुनिउष्यरविंतिहांसेज्य ॥ अलिगतदिश्राणाहेज ॥ सिमोनाबोखतेहतणी ॥ उपश्र  
णिकराजामहीधणी ॥ १७ ॥ रूपिकामदिवमहामति ॥ तेजिजित्यातारापति ॥ प्रनापिडीत्यारविरायः  
विंशिवृंदनमाव्यापाय ॥ १८ ॥ अनेकदशजित्यामहीपतिहेलांनिजवसिकीधित्ति ॥ हयगयरथ  
नपांमुपार ॥ अनेकपदातिनरऊकार ॥ १९ ॥ तसराणीइंद्राणीसती ॥ किंकमलाकिंपदावती ॥

अने कृष्ण अग्नि निर्मला । जाणते इतली मही कला ॥ २० ॥ पदराणी सुधे मधुनेतर तपुषु षडुपत्यन  
 पामिसत । नवयोवन नर चढा तिवेस । विलसि दशविध भोग अशेष ॥ २१ ॥ तेव ते गर्जधस्थो उण नास ।  
 उपश्रेणिकरा उरी आस ॥ इद्राणी मनहू उंलास ॥ उत्रजणो मही उमिमास ॥ २२ ॥ उच्छेदमगलगायि  
 गान । याव कजननिदि बहूदान ॥ दरवी राय ऊमर अजिराम ॥ श्रेणिक ऊमर धरुतवनाम ॥ २३ ॥ ब  
 त्रिशल कृण मोहनरुप ॥ अदलोकी सरवपाम्यो ॥ नृप कला बो हो नरिपाम्यो पार । रुषिमदनराय  
 अवतार ॥ २४ ॥ अनेकशा सुनरुणो उणवत ॥ यावन पदपाम्यो महासत । नित्यनित्य उच्छे  
 व होयितवनवा ॥ पंचशत ऊमर अव ॥ रते दवा ॥ २५ ॥ राजक रिउप श्रेणिकरा  
 य ॥ अनेकनरापति सवितपाय । एकदि ॥ वसुचंद्र उरीवर ईस ॥ नृपामामसर्मनेना  
 मिसिस ॥ २६ ॥ नाजिदशपडिनगाण ॥ श्रेणिकरा ऊजोणको प्यारायात कंषिकाय  
 ॥ अवरदा शातडावाराय ॥ २७ ॥ इद्राणी मलावोकना ॥ चरगीसिना परवक्रारणका  
 हलवा जिनिमाण । बंदिज सुतयवे ॥ यथा ॥ २८ ॥ इद्राणी मलावोकना ॥ चरगीसिना परवक्रारणका  
 द । लोह लंगर अकशखलकंत ॥ अबाड ॥ २९ ॥ इद्राणी मलावोकना ॥ चरगीसिना परवक्रारणका  
 शघायनमी उरीससजि ॥ ३० ॥ इद्राणी मलावोकना ॥ चरगीसिना परवक्रारणका ॥ अक्र  
 न करण ॥ ३१ ॥ इद्राणी मलावोकना ॥ चरगीसिना परवक्रारणका ॥ अक्र



लाम । उन्निदुर्जनहोयिंदाम । ४२ । निकटकउति पदहोयिं । उन्नित्राणवहिसइकोय । कल्याणकी । न  
 कदिउत्यकस्यो । तथीइइतणसुखवरो । ४३ । रागमारुणीइहा ॥ इणपरिणइयकरिमहा । मानि  
 श्रीजिनवरत्राण ॥ प्रजापालि प्रेमसुं । जाणइजो जाण ॥ १ ॥ इंडाणी आदिकरीनारिरत्रसुजाण ॥ विल  
 सिंनोगविधिपरिं । उन्निइइममाण ॥ २ ॥ कुरिपरतिवरनिदसि ॥ उपाश्रणिकसुखपाण ॥ अवर  
 कथारसवलद्वसजनसुणोणुणजाण ॥ ३ ॥ वो एई ॥ चइउरीसामीएकदा । सोमसमरीशिविति  
 सुहा ॥ उपाश्रणिकराजातिहणु ॥ तोसाचुप ॥ सुनरपणु ॥ करिकपटतिचंनरदेव । सा  
 ध्याअशयथाततरेव । मणिमाणिकसुका । फलतारइइअशनेचपलअपारइइअ  
 शलेइनेप्रधानराजउरीआव्योसुनवान । उपश्रणिकपरतिचुटणु । सुसुवृपसुखपा  
 म्योषणु ॥ ३ ॥ लेपसोपायनजोइनुरंग । मगधरासु । मनेधरनारंग ॥ प्रसाकीधितिहा घणी । सामस  
 मराजातहतणी ॥ ४ ॥ अशरत्रअदखपह । लहवोउभनदिअसगह । सुदरदयमनमोहनरूप  
 देवीअशरप्रयाम्यो नूप ॥ ५ ॥ अशपरीनाकराराव ॥ चव्याउरगगयावनमया । फसोअशराजाये  
 वदी ॥ एणमेविवाकोतकोटडी ॥ ६ ॥ कसाधानसुकेअकली ॥ ७ ॥ उरगगयाउललीइइउरग  
 लेइवनगयो ॥ परिजनतेसइइतिरक ॥ ८ ॥ अकशयवमिइइममात ॥ उणदिनाकोनाविमा

य ॥ इष्ट अश्वतरहिं कृणुष्वक जिष्णितरवरवाद्या अनेक ॥ १ ॥ तकिं अश्वतगपर्वतदरी । कालरूपवत  
 लाव्यो उरी । वतादरको नयपा म्यारायासाकि कपि धरहरकाय ॥ २ ॥ अनेकव्या घृगु जिघत धार । जेव  
 कनूकपाडिमोर । मदनराजको पिबइ जनि । शृङ्गिरीकंदरकडकडि ॥ १० ॥ जागिति अजगरमला  
 सलि जीव च्रात्य थी प्रस्तरगलि मोटा मरकटपाडि बीस । फली ककारकरिनिमिदीस ॥ ११ ॥ सिहंतादगिस्वि  
 रगडगडि नयकपितवनवरब रूपनि ॥ तवनमधि मगधनारश । तारव्या तत कृणुष्वप्रदश ॥ २२ ॥  
 पंड्यागत्रमाहिनरपति । जाणतरकतणीतकि त्रि । विरीघोडीतारवीगयो । पड्योराय मूर्च्छा विसृष्ट  
 यो ॥ १३ ॥ वेरतकी हिकोनरमाथ । पांम्योममय करिसंहीघात । किहारांजाम गधाधिपति  
 : गत्रमाहिनारव्यामाहामति ॥ १४ ॥ इमजाणीवि रजपरहरो । मऊजनसु प्रीति अनुमारा ॥ इष्ट  
 अश्वलेइगव्यावनवास ॥ तवसेनाव कृपांमित्रा । म ॥ १५ ॥ रायहरणजाणीतिलोक । राजपुरीजनपा  
 म्यासोक । विविधविचारकरितिहांवले । तवअश्वतमहुअव्यामली ॥ १६ ॥ नयरणीराणिवऊरडि  
 : पांमीमूर्च्छानिमिपडि । त्रैडिकरापार ॥ १७ ॥ उरुकाफलसुंदरदार ॥ १८ ॥ तयतनीरवहिंबहुधा  
 र । सोकसुडनयांमिपार । सुवसहित समतस । वनवतपुतातुडव्यपरी ॥ १९ ॥ वननीकंजजो  
 इनगदरी । रावसणीआसापर ॥ २० ॥ तवअश्वतमहुअव्यामली ॥ २१ ॥ तवअश्वतमहुअव्यामली ॥ २२ ॥

Handwritten text at the top center, possibly a title or header, in a dark ink.

Handwritten text below the title, possibly a date or a specific reference.

Handwritten text below the previous line, possibly a name or a signature.

Handwritten text on the right margin, possibly a page number or a note.

तवनमधिपत्नीशाम यमदेह  
घरतिलकवतीकुमरी। सुपिरं चक्रि  
त्रैमांदिदीगोतरनाथ। ततकणले  
नरी॥२२॥ ज्ञाणामागध प्रबिसंत। कणवरी  
लतेमही॥२३॥ कणकारणश्राव्योविहात।  
शुनसति। कत्रिवंशकंपत्नीपति॥२४॥ उक  
गयो। राजाकहितवपत्नीराय। वचन  
ज्ञगुणकरीमलि। तउबीनिंसाटिं बलि  
सावोम॥२६॥ पत्नीपतिराजातिकहि। ए  
सुऊमंदिरश्रावोमहीधणी॥२७॥ सुणीवयणवृषधरावातह। तेयमदमनिश्रावोगेह। गृहावा  
रदधीतहतणो। राजाविस्मयपाम्या घणा॥२८॥ येयमदेउकुणेमहामीत्र। कश्रावारीसदाएवि  
३। तस्यघरश्रसुनोजसकिंमाहाय। हृदयमीत्रविचारीजोय॥२९॥ सुणीयमदंमकहितत  
र्येव। एकउपायकहुं बुफादव। अथशुत्रीतिलकीवती। शुनाचारंजाणि सामती॥३०॥ अ

सप्तरीकशिराज्ञान । नपञ्जस्रानत्रनिपथ्यपान । मगधनरेडवचनसांभली । परमहर्षचित्रपाम्पोव  
ली ॥ ३१ ॥ तिलकवतीकन्यायुगागद । मगधरायसंधरतीस्रह । नलिपिरिजाजनानपञ्जकरि । दिनदिनरा  
यतपुंमनहरि ॥ ३२ ॥ च्छथयाजपाश्रणिकचप । तवदिहंकन्यात्ररुप । महामोदपाम्पोनरपति । चित्तिएक  
न्यकिरति ॥ ३३ ॥ चपलनेसुसुंराविशाल । चित्रचपलनहितगुणमाल । कविनपयोधरउरशृंगार । वाक्पक  
वितमखिवदिलगार ॥ ३४ ॥ गमनमंदथाजित्योग । यद्वचपकवर्षनहिमतिमंद । अतिवक्रकोमलचृत्र  
क ॥ च्चद्वदननहिमनवंक ॥ ३५ ॥ रव्यामोदरक । विजित्योदरीपणखिननितवनहि सुदरी । कल  
केशकोमलअनिसंम । जित्योवासगयु । एतहिस्यासं ॥ ३६ ॥ एदवीनारिनदीगीकदादि  
विप्रेमउलंसिसदा । शरीरवानसुंदरआका । र । जोतांउपत्यनयोमिषार ॥ ३७ ॥ अधिकरूपजा  
णीकामिनीएनिश्चिपरुजामिनी ॥ उपाश्रणिक । सदापरजापरचंड । बोलाब्योराजायमदम ॥ ३८ ॥  
तस्यपुत्रीसुप्रमअपार । सुकनिपरयावोमलसार । च्चदनसुणीमगधरायसंधरतीस्रह । यमदंडरासुरवपा  
श्याघुं ॥ ३९ ॥ विनयकरितिलगोपाय । तस्यसुणीमगधरायसंधरतीस्रह । यमदंडरासुरवपा  
गाधश । तिलकवतीपुत्रीलुडावश । धवलसांवेदिनारीअनिघरक ॥ ४० ॥ सुंदरी । अदभणी । राजकुं  
मरं सुंदरत ॥ ४१ ॥ शेषिकअनिघरक । यथा ॥ ४२ ॥ जोतदाकन्यासुंराउमं । तिहोतिलकवती

किंमपामिमां **करममेयोगिडे** **परिसदीपरातवमहिं** **धरते** **रुदीउंउक्रमहारा**  
य **जोतस्यपरणातुं होयिकाज** **असुड** **सुतसहीहोय** **तेहा** **राज्यअवरनहिकोय** **४३** **नि**  
य **मवतएहवोआचरो** **नोतिलकवतीकम्यानिवरो** **दइबोलपरणपाराजो** **तिलकवतीब** **ऊपामी** **।**  
मान **४४** **नवलनारमाधिपरवस्यो** **राजशहीगरीसचस्यो** **निजमंदिरआव्योमहाराय** **॥** **पजाउत्र**  
जइवागापाय **॥४५** **तिलकवतीमंदिरनृपरादे** **दगविधनोगअधरवलहि** **तिलकवतीसुतपा**  
मीतोम **ऊंमरवेलातिदीधुनाम** **॥४६** **अत्र** **कमिंपाम्योयोवतकाल** **दखीसुतचितिं**  
पाल **मगधरायवितिंकदा** **ऊंणसुत** **निपदआउंतदा** **॥४७** **ऊंमरवेलातिनि**  
होयिराज्य **नोअसुवचनतणीरहिलाज** **निमितजाणनि** **ब्रह्मुकाज** **कदाऊंणसू**  
तनोगवमिराज्य **॥४८** **वचनमूणीनिमितिक** **तणुं** **राजाविस्मयपाम्यो** **घणुं** **निमितपरीका**  
करवासुदा **तेडाव्याऊंमुरएकदा** **॥४९** **निर्मलऊंनइ** **कुरमनस्या** **रायआदिउि** **ऊंमरधस्य**  
१ **निजनिजघरातसुदुले** **इगया** **कणश्रेणिकऊंमइथीर** **धया** **॥५०** **श्रेणिकऊंन** **सवकसी**  
रधरी **लेइगयोनिजबुद्धिकरा** **दधीरायअणबोल्पारयो** **मनविचारकहिनिन** **विकस्यो** **॥५१** **अ**  
न्यवासरसुतामल्यावली **॥** **धर्वनिमीतमनसु** **अटकली** **नोतनऊंनले** **इमचरो** **वनटणविडनी**

रितरो ॥ २ ॥ विना पुन्य न तद्विबुध रवरी ॥ रीता कुं न ले इ आ व्या फरी ॥ श्रेणिक कुं मर करि उ पाय ॥ कुं न ले इ आ  
 व्या व न मा दि ॥ ५३ ॥ आ इ ट ए अ व र पा धरी ॥ ट ए बि ड घ ट घा व्या चरी ॥ म ग ध रा द त व कुं षो थ यो ॥ अ ता श्रेणिक  
 त व मं दि र ग यो ॥ ५४ ॥ र विं रा य जो ज न नो सं व ॥ ते डा व्या कुं म र स त प व ॥ ज मि कुं म रा प्र मि पं र व स्मा ॥ पां च ॥  
 शि त व मे ह ल्या कुं त रा ॥ ५५ ॥ व ल गा श्वा न ए आ ति हां त्रा म ॥ ना वा कुं म र न पां थिं सा म ॥ श्रेणिक कुं म र  
 करिं नो ज न पां न ॥ अ व र पा त्र धी वा स्था श्वा न ॥ ५६ ॥ द वी रा य चि ता उ र ह वो ॥ अ ग त्प ज या य र वि ए  
 क न व्यो ॥ न ग र हा ह सुं एी सुं कुं मार ॥ चा म र ॥ अ त्र मि हा स न तार ॥ ५७ ॥ व निं ज ई आ त्र ए त्र  
 सी र ध सो ॥ श्रेणिक कुं म र गुं णा प र वा ॥ स्मा ॥ अ व र कुं म र ध न क्ष न्य अ पा र के ता  
 कुं म र उ रं ग म तार ॥ ५८ ॥ के ता ग ज र घ ले ई ॥ सं व स्मा ॥ ते स कुं ज ई ॥ श्रेणिक अ व स स्मा  
 ॥ ति स कुं ज ई श्रेणिक अ व स स्मा ॥ द वी नू प ॥ ता र दि घ णी ॥ श्रेणिक कुं म र ल ह्यो म ही ध णी  
 ५९ ॥ अ व र उ पा य की ध त व घ णा ॥ कुं म र आ य णा ॥ नौ न त क रं ड न स्मा सू ष डी ॥ ज ल  
 कुं ने सु र व सु डा ज डी ॥ ६० ॥ अ रिं क र उ र ॥ अ व र क ॥ इ ह र ॥ अ वा स य क ॥ क रं ड कुं न उ धा  
 आ वि ना ॥ जो ज न पां न क णा ॥ कुं म र ॥ अ व र क ॥ इ ह र ॥ अ वा स य क ॥ क रं ड कुं न उ धा  
 ध ॥ इ ति प रि शी षा द इ म ह ॥ अ व र क ॥ इ ह र ॥ अ वा स य क ॥ क रं ड कुं न उ धा ॥ अ व र क ॥ इ ह र ॥ अ वा स य क ॥ क रं ड कुं न उ धा ॥

६





जाणिंमनोदर। गृहपणिरहिजोग्रह  
तवइंडाणीमाताविरहाएली। रक्ततीश्रीक  
रगयोसुरवटाली। ८। कृष्णमियापकस्या  
जागीरयाली। महीमिसुनिवरदीधी  
नलिंबाली। सुनितंद्याकिंमिधीरसाली। वि  
वाली। १०। दंतणीयाधीनीरसाली। आसा  
ली। १२। नगरतणोतबलोकनिवासी। कहे  
१। तविमासी। राजकुंमरकीदोवतवासी। १३।  
रहासी। इणियरितंगररहिएउदासी। चाल्य  
पासी। चित्तिमातनष्टरीरआसी। तबनंदीग्रामदीवुएउलासी। नगरमाहिआव्यागुणनासी। १५।  
इंद्रदत्तमाहमल्यापरदिशी। कुंमरवदिमाउलारसुवसी। नंदिदिश्वशिंसुनलसी। चाल्यो  
जनजईयिउदसी। १६। जईविप्रसमीपिंवातप्रकासी। नोजननव्यदीयोसुरववासी। उपतितणा  
प्रच्योसुनटविलासी। महीपतिकाजिगमनअन्यासी। १७। बो ल्योविप्रकरीतवहासी। राजाना

सुंमरमुयेदशंतरतार। ८।  
गैयाली। इणियरितंगररहिएउदासी। चाल्य  
१। सुतवीरहा। नृपिंकोनवाव  
कअतलजलदेहपूरवाली। किवननूमिहावा  
इतलीधारउहाली। ११। एरअपवाद्बो ल्यामिं  
रहिमंनवाली। कुंमरतणोजोयिपथनीहा  
राजानीसुबुद्धीविणामी। नृपिंकोनवाव  
सीकिंउरअतउरवासी। हदनकरिसवकति  
णिककुंमरनिरासी। १४। पालोकुंमरहवारपी  
नगरमाहिआव्यागुणनासी। १५।  
नंदिदिश्वशिंसुनलसी। चाल्यो  
नोजननव्यदीयोसुरववासी। उपतितणा  
बो ल्योविप्रकरीतवहासी। राजाना



कार्यजोतरे। हा विपंथसुदुःख... महियरी। प्रलीयती परिधिचारन  
वीहीवानवीमा जल्योरसभारथसन्दि... नदीरमहायजग... ज्यसुपगंतीर। कुंमरु  
मानेहपिहिरितिउत्ररीयोजलतीर... शनि... सोद... विनि... मती... जोकन्याएहनिदिउ  
नोहणदीप्रदीन॥५॥ अवरुतीउलनर... रतजि... जलजो... पद... एह... उपानहपिहिरिति। उतस्यो  
नीरंज्जाण॥६॥ ताहाएवटावगिवस्या... गहिरांतीर। यत्रचक्रकरीशीरधरि। कुंमरवि  
चक्रणवीर॥७॥ सोवितितापनिवारवाच... शिणवत। तापविनातरुवरतलि। उत्र॥  
धरितअसत॥८॥ वोपइ॥॥ अमंतएम... हीजाणपाआज सुखेथकीनवीमी।  
जिकाज। अनेकसुखमिजोयाकली। पण... माहासुखेएहथीलीहवली॥१॥ नगरएक  
नरनारीनसु। वसुघाटकंतीपरवसु। रवीकुंमरकहिमुलीमाम। काहाउधसकिं।  
वसुउंगाम॥२॥ उरुपरकहीवासुचकार। ताडांतानारीमनोहार। कहिमागधकहोसाहविचार  
। एवाधीकिंछुटीनारि। ३। इद्रतमजि... तिवात। एऊणकर्मियाम्यासाथ। जोवाएहसुमा  
डीयि॥ तोजीवितआसा... मीयि। ४। तघहीवु... नऊनरपरवसु। उरुषव्यारनिषाधिधसु। दहा  
नकीयाकरवानिताह। रुदतकरिसु... णिनेह॥५॥ कुंमरकहिमुणोसाहविचार। देवतणी

गति ए संसार। पुर्वि भरण पांमो न र राज। किं दि धी गति ए हो तो आज ॥ ६ ॥ कहिं र मी त्र वि चारी ए ह। अ व  
 र एक वली कहुं सं दे ह। साली व प्र दी सिं गं सी र। फली त प क म हानी म ल नी र ॥ ७ ॥ आ मो दिं म धु कर  
 म ह प्र म्या। गुं जिं नि ज नारी। पर व म्या ॥ कहिं र मा उ ल हेत्र वि चार। नि ज न अ थिं फ ल ली धं तार ॥ ८ ॥ किं  
 ह विं फ ल ले सिं गं ए वं त। व हो रु द य वि चारी सं ता ह ल हां कं तो व ली न र एक। दि खीं अ थिं क व दि व  
 विक ॥ ९ ॥ क हो ए ह लां गू ल के ता डाला पु छिं र। ज कुं म र गुं ण माल। ब द री व ह ए कं गिं दिं र गं सी र  
 । पा कां फ ल क ली र व करिं की र ॥ १० ॥ ब द री कं ट क के ता व ली। क हो मां म नि ज बु छिं ।  
 क ली। अ ष्ठी चिं तिं ग हिलो ए ह। क पिं रु डो नि र म ल दे ह ॥ ११ ॥ ए ह निं उ त्त र ही जिं  
 आज। तो मा रिं न वि सा जिं का जा ए ह ना मा स्मा जि थिं को क। जो जा णिं तो ह सिं ब ड लो क  
 ॥ १२ ॥ अ ष्ठी अ थिं क आ व्या तां म। वे णा तं ट पुर अ थिं अ थिं र मा। सा ह क दि अ थिं क निं तार ॥ सि  
 ति करी कां हां र हिं सो मुं डं मा र ॥ १३ ॥ म र अ थिं निं र हिं मुं अ थिं। मा उ ल ग म न करे गि ह त सो। त व  
 त सा ह क दिं स को माल। अ थिं नी ल अ थिं विं वा मुं बाल ॥ १४ ॥ इ म क र अ थिं ग यो नि जा ग ह।  
 व द न जो ई मू ष पा म्या धे ह। मुं ष आ का अ थिं का र। ने व आ का र य यो मुं वि चार ॥ १५ ॥ अं ग  
 आ का रि म न ह वि चार जां व ह। अ थिं ता रि। इ अ थिं गू ल के ता डाला पु छिं र। अ थिं निं उ त्त र ही जिं



एषु रस्वत हि अतिशयं वां ॥ २७ ॥ कथा कल्लो लज्जित रश्नेद । पंथ तरणा टालि माहारक्द । उपान हर्षे  
 हस्या जल तीर । तन रवर मही शुण ग नीर ॥ २८ ॥ अहिद गल जल जो गि होय । ति हां कंटक न विजां लि को  
 य । तरु उ परि प हि अत्रु मरि । मल सुं वा दिक म म्म किं करि ॥ २९ ॥ तधी आत पत्र शिर धरी । तस निं दे  
 खा डी वा उरी । जिन वर धर्म जिन शर गेह । साध मि सन्न न सुं नेह ॥ ३० ॥ तपन्न व स वं अ निरं मः  
 अवर न य र उ ज ड अरं म । बां धि बुटी प्रश्नि वार । जे पर ती ते बां धि नारी ॥ ३१ ॥ अत्य अ ब ला बु  
 टी न एण मो न र य एण त का अ व ग लो । वित य व न हा तार द याल । तह नो क हि वि त त  
 कृण काल ॥ ३२ ॥ दान का ज एक न वी दि विरु उ । म हां जी व नो त न र सु व । आ छि  
 रण की धं अ ति घ णु । त्रि लिंगं अ न्न षा धं आप णु । ३३ ॥ न हि की धो रण नो सं यो ग । ते मा न व  
 ह वि ले सिं जोग । प्रश्न क सु ह ल मा षा न णु । ह निं अ लि मा लि घ णु ॥ ३४ ॥ दि सा षा म ही ह ल  
 निं हो य । ब ह री कं ट क जो लो हो य । ए म कं ट क हो ये न स । ए स व वा क्य त हि अ नि रं  
 म ॥ ३५ ॥ ए ह नी ता त परी हां क रं म । मारो ह कं । म रि व एक मि उ णा दि क म ती । मो क  
 ली जि हां अ णि क न र प ति ॥ ३६ ॥ त ल म । ख एक । न इ का हे । म र निं ध री य वि व क । इ  
 दं द न्ना अ टि ध व त । त । ३७ ॥ म न श यी कं म । त ल म क ल्यु छि



सारिं राज अत्र रायाय तं पुं हि का ३३ बनीं नंदु ल छिं अ म स घा ॥ आ ३ त तं दु ल त स हा च्य ॥ ध ए ॥  
 तं दु ल धीं श्रां लो प क वां त ॥ शालि दाल ध त शी त ल वां त ॥ मा ड म र की ज उ प डी ॥ इ त्या दि क श्रां लो मू ष  
 डी ॥ ५० ॥ ए बु नो ज न ज क धी म लि ॥ ता सु क व्र त त रु व र म ही ॥ त लि ॥ व व न या वि स्म य पा मी वा ल ॥ तं ड  
 ल गृ ह ण क स त त काल ॥ ५१ ॥ त न ड ड का की ध वि क्रि य का ज स र वि नि दी ध श्रे त व स्र पि दि री र ग ध री  
 : दौ हा टि ति उ ण म नी म च री ॥ ५२ ॥ ज ड री त र र म ता जि हां ॥ अ प हं द म र वि ला वी ति हा ॥ र ड हा  
 री म खे न र न ला ॥ ए र वा धि ष्ठि त उ क ली : ॥ ५३ ॥ मू ल द इ लिं ज न र म त ॥ त न र ड र म  
 तां ज य वं त ॥ अ ष्ठ सि धि पा मि ब ड री ॥ ५४ ॥ त न र नि म्म ल पा मि ह्री दि ॥ ५४ ॥ जाली  
 अ ति श य न द म न र्पा ॥ त म घ ला लि वा ॥ ५५ ॥ ए क ज ड री ति ही ॥ धा हां म ॥ ली  
 धा उ य हं द उ ण या म ॥ ५५ ॥ ध ना लु इ नि उ म ती न व व ली ॥ क म र नि वि त आ षु म ली त ध न  
 धी र ध न आ चार की धा वं ज न वि वि ध न ॥ ५६ ॥ क न्या ली पां म्मा व ड म नं ॥ त्र पि की उ नो ज न पा  
 न ॥ ना ग र व ली प त्र र मा ल ॥ रु द्धा ति ॥ ५७ ॥ उ गी र व ड म ल र ए ल ची ॥ ए हा र मार  
 मुं बा डी ॥ द ग्ध च ल व ली ॥ व व र वि ॥ ५८ ॥ आ डो वि र ॥ ५९ ॥ त नो वि र करी वा व स्यो :  
 योग्य ज्ञाणी ॥ ६० ॥ र रं ग ध र ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥

सिंकरो । ईशिय विचरुपुत्रा ॥ ६३ ॥ विपमकाजएकरसुं कसुं । ह्य । सर  
 लमत्रउमश ॥ ६४ ॥ अजकरु ॥ ६५ ॥ विवरिशुमुमुद्राः  
 ६॥ एकिपिलिकापरिमन् ॥ ६६ ॥ मकर ॥ ६७ ॥ उरपर ॥ ६८ ॥ तकन्याक्रम  
 रिवशकरी ॥ ६९ ॥ राजक्रमरयुलडा ॥ ७० ॥ यामकरु ॥ ७१ ॥ इत्राकुली ॥ सुतात्रागत्रवलोकीता  
 त ॥ परणावीक्रमरीविरमात ॥ ७२ ॥ वरक ॥ ७३ ॥ जत्रवतार ॥ वहिलोकयशबिबिध प्रकार  
 ॥ ७४ ॥ उन्पिंवरमलि ॥ उरुषसुधम ॥ ७५ ॥ उन्पिं  
 मान ॥ उणप्रतापिनवहनिधान ॥ ७६ ॥ मीयित्तुमवान ॥ ७७ ॥ उन्पिरायदायिबहु  
 जालिध्रजोग ॥ ७८ ॥ निउणनदश्रायणह ॥ ७९ ॥ न्यमल्यासरसोमयोग ॥ वरवहु नोगविद  
 वधिव ॥ ८० ॥ बाहबी ॥ अजवदाननणी ॥ ८१ ॥ निधान ॥ गर्धस्योवहयामीमान ॥ सातदीना  
 करायनजसिनेद ॥ उर्वलकारण उठिराज ॥ ८२ ॥ सिनबी ॥ ८३ ॥ माननीमनेमादिपासिरेद ॥ श्रेणि  
 कदोसुवीचार ॥ सुणीरायबो ल्यामनो हार ॥ ८४ ॥ किदोवनातव्यंके एकाज ॥ ८५ ॥ डो ॥ हा लानेद  
 मीबी ॥ ८६ ॥ अरुंआशाहुंउकतणी ॥ अजयदाननीमावावणी ॥ अजवदएसतोषीनारि ॥ नदीतट ॥  
 आविकरिंविचार ॥ ८७ ॥ तदनगरतरणाशजवसुपाल ॥ ८८ ॥ तदनोगजवदोमहाकाल ॥ मदजर

तो परवस गजराज | लोपी अंकुश लोपी लक्ष्मण | ७० | तवानन यरप योवु नाश | नाजिंहटा अणि अचाम  
 : | नाजिंहटा अणो अणो अणो | नाजिंहटा मन्त्री वीरशाल | ७१ | धरिधीर दीयिं कुंतार | गजवरा विणकल  
 गार | नखरवनी ताकरि पाकार | सबल सुवरात करि हकार | ७२ | नगर लोकनि व्याकुल करी | नदी  
 तीर आयोग जफरी | गडगड गाजिंहटा गं नीर अणी करायिं बाला व्याधीर | ७३ | गजसुं बुध करि  
 महाराय | बाली सुष्टि दीयिं घनघाय | भारिम दस्रान्यक अटकली | मगधराय वदो उलली | ७४ |  
 जोई जम जेपिनर नारि | रूपयोवन बल करि विचार | ईइदत उत्री वरणह | रूपिं काम  
 देव सुं एगह | ७५ | नगर लोक अणुटे पूरवसो | हिरदवाद्या अणिक संवसो | ग  
 जवस जोणी नगर नरेस | आव्यो कुपर दिवाल ह्यावश | ७६ | कदिं अणिक संवसो ॥  
 व्याहारि | नगज किंम जीतो सुकुं मार मागो वर आ उमको माल | धरी अणि मने वोल्या बा  
 ल | ७७ | तवान इइदत साहावदि | कुंमर नावत जाली • इदि | जोवर आपिन गरे नारश तामा  
 तदिना वधिसा शिदत्र | ७८ | अणुयद लीला अणी करी | पाप बुद्धिस वलि परहोरा | आने द्यौ  
 राजा वसुपाल | अणुयदां नदी धनत काल | ७९ | नहर मन्त्री अणिकली | रमिराय सुं अणिकली  
 : | अणुयद अणुयद नवमास | अणुयद अणुयद अणुयद | ८० | अणुयद अणुयद अणुयद | अणुयद अणुयद अणुयद



विचारकहिंमंत्रिमाथ । तडावोश्रेणिकनरनाथ । तोमगधदशतणीस्त्रितरहिं । राज्यजेदातजली । परि  
 लहिं ७ । करीविचारलिषोमहालेष । गयोदुतलहीवातविशेष । वेणानटउरआव्योवही । वातनि  
 खिलश्रेणिकनिकही । उदुतलेषधीमानीवात हसितवदनहवोनरनाथ । लेखनेदससरातिक  
 दो । मागीशीषवतिताघरिगयो । ए सुतसहितबोलाविनारि । मगधरायिसनकदो विचार । मग  
 १ शीषवदिनेनाथ । जिहालगिरंज्येनश्राविहा । थ १० तिहालगिताततणिं धरिंरहो । उत्रसहि  
 तसुखशातालहो । राज्यतणीरुद्विपासुसुदा । तडुमोकलसंसहितदा १० । चालघानी ।  
 सीजली । पंचमहस्रंजटश्राव्यामली । उट । पाणिजिलेसेमोराय । प्रकटधईतला  
 गापाय १२ । शीखलहीश्रेणिकंसवसो । सह । प्रप्रवञ्जनटपरवस्या ॥ दशसमीपिंश्राव्ये  
 १३ । सामंतरायमत्यामंतीश १३ । सुंकेपारा । थावलतिवली । वउरंगामताश्राविमली । मग  
 धदशतणे महाराज । थाव्याश्रेणिकसीधंकाज १४ । दईनेसीकटकसजकस्यो । नगरावाह  
 श्राविउतस्यो । बडुबलदधीश्रेणिक । मलालिनयथांमोघु १५ । श्रेणिकरायिनजातो  
 यदो । मजीसाधपल्लीजईरदो । मग । तलोमहाराज । मानसणजईलागोपाय १६ । सु  
 खदुखकथाभातासुकही । विरासिहा । मगधराय । निगिचमरिविद्यावरणक । श्राव्योरा



लव १४

१३

यत्किं कहि विविकं १७ अतिं को खंडि पारु रर ॥ अतः का प्रतीति के रस ॥ अपभ्रंशो कवसे  
 स्वगच्छा ॥ विरोधुदनमाविशीश ॥ १८ मनो रेशे ननी सो ली लता ॥ विधा प्रथमा तदधरि एक सुता  
 दीठी ततिं बो वनावश ॥ त वनि मत्र रय यानाश ॥ १९ सुनि रर वर वगे मस जं वसि ॥ उच्छि कं लक  
 न्यावरहसि ॥ ज्ञान चंतक हि स्वग अषे मरि ॥ २० कन्या वर इदय महा रि ॥ २१ अ वनि यि अ वनि तिल  
 कं महा रूप ॥ एह कन्या वर श्रेणि क न्ये उलिवरा ॥ वचन सुणी गुं ल कृ पत स्तनि देवी वा छि नूप ॥ २२  
 तिणि अ व सरि विद्या धर एक ॥ हं स ही प जो क ॥ रीय विविक नामि र न्न दूल र व ग यति ॥ मा गि  
 कन्या रूपि रती ॥ २३ यति वर वय ल करी ॥ निरधार ॥ नापि कन्या क ही य विचार ॥ को  
 प्यार न्न दूल बल करी ॥ तत कृ ल श्रा वी विटी ॥ पुरी ॥ २४ कट कि वि डो क न्या तात ॥ त क हि  
 वा आ न्यो न्य पर्वने ॥ को प्यो श्रणि क से ना करि ॥ विद्या धर व ल उ उ चरि ॥ २५ क व ल का ज से ना  
 तर पति ॥ कि ल न् चर कि हा र व वर कि ति ॥ तदा जं दू कं म र ल घा वरा ॥ श्रेणि क रा य त तिं आ द  
 श ॥ २६ विद्या धर सा धिं स ज था या र न्न दूल स मि पि ग यो ॥ तत कृ ल श्रणि क रा स च र्चा ॥ च उ रं ग म  
 ना सूप र व सो ॥ २७ व ध्या अ ट वी म धिं गि रि ॥ ऊ र ल व ल इ द्यो उ त री ॥ त वा त जं दू कं म र ग  
 नीर ॥ र न्न दूल नि क हि सुं त प वी र ॥ २८ ॥ जो उं न्या य वं त उ ल वं त ॥ पर नारी किं म वा छि सं तः



नटकहोकेकाज। रायकदिम... नवशालिधले। इत्यनधीनाडीनेदी।  
 शीमाचिप्रतणाधलिवालुगम। कदिप्रानअवधाराइम। नवावेनाकिमकाजिरीम। ४५। एदोषवि  
 नायायिशतपंड। दोषदेईनिदीजिहंत। न... मविधारीराय। इवाहे... परचिक्रपाय। ४६। ए  
 कदिवसश्रेणिकनरनाथ। मषमोकल्पारसे... मीथा। वडाविषनिश्राप्यालुष। राजसेवकवदि  
 वंचनविशेष। ४७। मषमोकल्पोछिंतसुयासः। अहनिमिचारा निर्मलयास। दुर्बलशबल  
 जोकरसायदा॥ ग्रामलोपमिश्रणिकत... दा। ४८। श्रापीमिडासेवकवल्या विषमका  
 जुजाणीद्विजमल्या। बलगिंवाडवनेद... नविलहि। चितोउरथईनिजघरिंरंहेः  
 ४९। तिणेश्रवसरिवलीअनयकुमारमा... तसहितश्राव्यामनोहार। जोइविप्रनिंउच्छि  
 हसीकहोवाडवतसुचितांकसी॥ ५०। वदिवि... प्रबहुयामिंखेद। कत्योऊंमरनिमिडाचेद। ल  
 हीवातभवअनयकुमार। वदिविप्रनिकरीविचीर॥ ५१। टालुहुचितांतसुतणी। लहोविप्रसुख  
 सानाघणी। द्वायव्याप्रमध्यमिदोसारवाधियोषाश्रासश्रायार॥ ५२। दुर्बलसुलनथायोरष। पहे  
 एकइमराष्यामष। मिडामोकल्पातादृशकूपदधीविस्मययाम्याचूय॥ ५३। एदूविघनजाणीद्विज  
 इरा। राजकुमरनिनामिशिश। वलेविप्रकेशिचिनेती। उकधीयामरह्यामहामती॥ ५४। राजा

केपनपामिंश्रंत। त्यांहांलगिंश्रमघरिंरहोमाहंत। शयवचोहरआव्याएक। वदिंविप्रनिविनयविदक। ५०। कृ  
 प्परवापिकामागिंइस। वाव्यामाकलीनामाशीश। विषमवानविप्रसांनली। कंमरसमीपिंश्राव्यामली। ५१।  
 कप्परवापिकामागिराय। वाव्यामाकलीकहोकिमजाय। कंमरउपायविकारीषरो। वदिंविप्रचिंतापरह  
 रो। ५२। निदावराजाहोयियहा। विप्रवायलेइजाउंतहा। वषनमहिषमिंटासजकरो। उंटगांयमहीवी  
 : जोतरो। ५३। नदीयांमथाजोडैहारि। मोहोरमोर। माकलोराजाहारं। कंमरबुद्धिविप्रश्रुतसरी। ५  
 अवंहवाल्याजोतरी। ५४। पंचशब्दवाजिंनिम। ए। उडिंवेहनसूजिंताण। हकिंविप्रकोला  
 हलकरिं। राजमेंदिरआवीउचरिं। ५५। क। प्परवापिकाआणीआजनिडावसाबालिंम  
 हाराज। जाहांथीआणीनिहांशुकोगमिं। जा। उगेहथीनदीश्रीम। ५६। नदीशीषआव्यानि  
 जागह। राजकंमरसुंधरतानही। जाग्या। कजाणी। वलीविप्रसूमाडिरेवेद। ५७। मातंग  
 तोलडलायिंधरो। मानकरोवा७२परहरो। महुनवलीचिंतिश्रसुं। हविंकंमरकहोकरसंकसुं  
 । ५८। अजयकंमारआव्याससरी। नाव्यरधुं। निशाण्यधीर। राजनारिजउयधिकोहांण। जाणिक  
 रमकरिंसहिलाण। ५९। वालुबहाण। ररी। आणसुकिंरुवेली। वंटआणीतोल्यापावां  
 ए। कडोरसुयनिंगसपरिमंश। ६०। पंदीर। चोविंरअललकरुअंजरी। जोउं।

जोसवलीजाणोवेदतोमूलडालकरीआरो  
 हाथ्य लेईकंमरआव्योजलतीर वृत्ति  
 गआगलमेवस्यो कदो नूपतिकाष्टवि  
 नरश रमिंदीप्रतिदिआदश तद्वेतील  
 पात्रघृत्कृत्योचरी तेतीलज्वलीतिलजकर  
 ६५ तिलवातहीजश्रवणसुणी अजयकंमर  
 ३ तिलकरीचरोतदजपात्र ६६ कंमरबु  
 कराय पांम्यावीमयश्रेणीकवदि एवंपरा  
 विनगायमहिषीद्वाजराज सुणीवातवाडवनीर मली पुबिअजयकंमरनिवली ६८ हीधीकंमरि  
 बुद्धिविशाल पीलीशालियंत्रिसकोमाल कोमलशालितणुतदुध मगधरायनिआशुश्रद्ध ६९  
 कहिंचूपवाडवनिवली आजसनायिआदोली लावोताशुडवरवरव बुद्धकरतीहाखोए  
 क ७० पुच्छीनेदकंमरनिंदीप्र राजसनायिआव्याधीप्र चंचलवरणाबुद्धसजकस्यो उद्वल  
 लदर्येणआगलिंधस्यो ७१ दरवीककटनिजप्रतिरूप नडिकोधसंसांनिधचूप रायिद्वाजजा



रवीराजसुनटकहिवाल। जंभू। त्वे। व्याप्य। काम। ॥ ५३ ॥ कंमरकहिश्च। निरे। रसाले। किंसीतल॥  
आधुनतकालकसाविचारसवकम। ५४ ॥ अत्यधुन। न। मांगे। वला। ॥ ५४ ॥ कंमरिजंभूफलनिर  
मलो। करधरीकीधंरसआगलां। नां। गोविं। परपरितपडा। तिकलशजंभू। नटकंरज्या। ५५ ॥ फल  
कंकिंवल्लपरहरि। जोयिंसादबज्जकोत्रक। ५६ ॥ कंमरकहिफलकंकोबहु। किंकंभुषभुवलीज  
मिसडु। ५६ ॥ तलाज्यानरपरीहाकरी। राजभू। नायिंआव्याफरी। कहिंश्रणिकनिनांमिश्री।  
श। एबुद्धिअपर। पुरुषनीइश। ५७ ॥ तिमति। वतंनिमरंगधनारश। तडाविवलीदिआदे  
श। मागजिमागोविनासंचरि। दिवशारात्रि। ५८ ॥ गमनपरहार। ५८ ॥ खिंचुहाजस्योमा॥  
आववीर। कंमरवित्रकणसाहसधीरश्री। श्रादिकवाहनपरहार। चरणसंचारखंमांश्र  
खरि। ५९ ॥ राजनगरआवोइमकरी। तातय्य। बुद्धिहुंजांउंपरी। विषमचातविप्रसांनली।  
नयकंपिततेआव्यासली। ६० ॥ कंमरकहिंदिज्जन्मपरहारा। आणोशकटदृषज्जोतरा।  
आणीशकटसाकंमज्जकं। तउपरिबिंसीकरधसुं। ६१ ॥ सीकातलिंघगलाबाधस्याइसकं  
मरराजनय्यरसंचर्या। संधाकालसमयत्रटकली। विप्रमयलसुंचाल्योमली। ६२ ॥ वावरिहरि  
मंथकसुरवडी। वाजिंतेलदडीदउवमी। रणकाहलवांजिकंसाला। नगरमध्यंइमआव्योवाल

ए३। कामिनी कौतुक जावाधसिं । तद्वी अघरवनि सुदुहसिं । जस जं पिनर नारिं वृदं जोयिं अन्न यकं  
 मर खरव वेद । ए४। रुपिका मां देव सम देह । बहु पि रिवार मू आवागह । नमो राय निवृत्त रकमार  
 : मत्पाने हत आ विषार ॥ ए५। अन्न यक मरि वाड वति वली । अन्न यहा ता देव रा सुं मली मर धरा  
 य सुत जा एपा गुणी ॥ इति प्रसंसा की धी घणी ॥ ए६। पतिरा वि म हो र प व आदरी । तं ह श्री पट र  
 णी करी । अन्न यक मर नि प ह यु वरा ज । आरि ॥ मू प करि सु न का ज ॥ ए७। अ व नी पा लि जी नि  
 अरी । बो ध ध र्म मा जो आदरी । बो ह द व अ ॥ रु र्जिं पा य । बो ध घा वा अ णि क म हा रा  
 य ॥ ए८। ति णिं अ व म रि अ छि ध न प्र ति । स ॥ सु द ह त ना मि म हा स ती । पु त्र क ल त्र म  
 दि त उ ह्य ल सो । रां ज गृ हि ष्ट री आ वी व सो ॥ ए९। वि ना री अ छि यिं व री । पि हिं ती व सु द  
 त्रा सुं हरी । वि जी व सु मि त्रा व र ना रि । वि न रा ॥ ए१०। क ल हि आ वा र ॥ ए११। त ह नि पु त्र ह वो गु  
 क वं त । रु पि अ म र ना म स स त ॥ हो ए क म र श त सु त नि स हा । पा लि ना लिं पा पि सु हा ॥ १०१ ॥ म  
 हिं आ नि गि उं ण मा ल ॥ ए१२। अ स त्प व सु द ता आ ज न । व नो लो वि व र त न्य द री । क हि मि सु त ज न म्पा  
 ए ना री त हा ॥ १०२ ॥ अ स त्प व सु द ता आ ज न । व नो लो वि व र त न्य द री । क हि मि सु त ज न म्पा  
 जा मि नी । त द्वा इ ध र नी आ मि नी ॥ १०३ ॥ अ स त्प व सु द ता आ ज न । व नो लो वि व र त न्य द री । क हि मि सु त ज न म्पा

काञ्चणोधरिं द्विष्वहुपामिंवे... लहिनेर ४ तदातत्रपसनादिनारि  
 कहिआयणो हृदयविचार नृपति... गम्यायहादिशीषकंमरनेतदा ५ कपटसुंऊ  
 सरिंलीधबाल नारव्यो नृसुत्रपरिगतनाल काठीबुरिकाकोपिकरी तेनालकउपरिउ धरी  
 ६ ऊमरकहिवनातनहिलाज अर्द्धेअर्द्धेकरीआपुआज एहनोअवरउपायनलहुदिन  
 प्रतिवादअज्ञानविमडुं ७ वसुमीत्राकहि सुतनीमोत मामाराबालकनित्रातएसहीव  
 सुदत्रानोपुत्र एहनिंसुहुआपाघरसूत्रा ८ एहवांचनसुणीगुणवंत कहिएसुतनी  
 मानासंत एहनिंप्रेमपुत्रसुंसहाःन्या दकरीसुतआप्पातदा ९ वसुदत्राअ  
 एजसुवसकरी नगरबाहिरकाठीदुख चरी इत्यादिककरिन्यायविचार राजनग  
 ररहिराजऊंमार १० वसिंअयोध्यायियां सरएकबलनइनामिंबऊतविवक नडात  
 हनिघरिंजामिनी वंडवदनीअनरजगामिनी १० खंजननयणीकोकिलस्वरा अधिकरू  
 पिंजीतिंअपुशरा अवरएकतिहाकृत्रिवंश रुपवंतवलीऊलअवतंस ११ महाअधिकार  
 रीतांमनसतातहनिमाधवीनारिसंत रूपरहितगुणहीनगमार उरअवगुणऊणपामिं  
 पार १२ नद्वारूपादस्त्रिएकदा वसंतकोमसरविद्योसदा लहीअवशरनदासुंदरी लो

नदरवामीतिजवसकरी ॥ १३ ॥ नित्यनित्यनोगविनोगरसात्तावसंतमीत्रसुंनडाबाल । एकदिवसदीवी  
 मुनिवीर । ज्ञानवंततत्रगणहंगनीर ॥ १४ ॥ तावयोवनसुंदरकावजइनज्ञानवलागीपाव । सुनीवर ।  
 वचनथीव्रतआचरि ॥ नाविअवरप्ररुषपरहरिं ॥ १५ ॥ तनिजघरिंआविमनोहार । निजपतिसूधरिप्रम  
 अपार । तवलीवातवसंतिलही । हविंविनितावसनाविमदी ॥ १६ ॥ चितिअवरउपायअनेक । शील  
 पंडवाकरिंविबक हविंदुविद्यासाधनकरं । सबलशीलएहजंपरहसूं ॥ १७ ॥ तिंणिंनगत्यकरी  
 एकजोगीतणी । लीधमंत्रवदुरुपणी वन । जइतिवमाधिवतरी । नगरमध्यंआव्यातफ  
 री ॥ १८ ॥ लहीअवसरनडानिंगहाबलन । इरुपिंआव्यातह । लंछननेदिजाणो ।  
 जोर ॥ नदायिंजीडांघरद्वार ॥ १९ ॥ वविताव । वनकलाहलसुणी ॥ वगिवलीआव्योघरध  
 णी । आव्याअतिअधिकारीलोक । आविंता । वनिताचोक ॥ २० ॥ सररबारूपनपांमिनन्यायन  
 थायिलहिंबहुरेवद सत्यअसत्यपा । ग । अन्नयऊमरतिंआवीमगल्या ॥ २१ ॥ ऊंमरिंडु  
 द्विकरीदोएधर्या ॥ तमंदिरमधिव । कहिंऊंवाविवरिंनिमंरिं ॥ तनरनिंनडाआदरि  
 २२ ॥ ऊंमरवन्नकरणेसांनं । जशानीर । हरयोकपटीहलीमनिचिनिअसूं । गईनारिहवि  
 करसूं ॥ २३ ॥ उलालाविवरिं । २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

बाहिरकाद्वोपचोर २४ सुवे- नार श्याप कं मरा करी विरार एकदिवस नूपरिष्वद  
डी गलकयभधिंतिपनी २५ तिञ्च- निकदिश्वरी कं विर हो काद्याकरधरी वंशविना  
द्वारकपरहरी ॥ तातदा बुद्धि प्रेमसा २६ मरिगामहयगोला धरु ॥ नारवो सु डावपरिपञ्चो  
गोमयागालो सुकोयदा ॥ कृप नरु ३० ॥ दा २७ के दिकं वृष्णिका नरी ७ परिगोमय श्री  
सुतरी लिधसुडां क्र मरिहाथ ॥ देखा मीर २८ रताथ २९ इति उत्रनि मग धनारश ॥ अपिग  
जवरदय उरादश ॥ इणी पिरि उत्रपिता बक्र ३० नेह पालिराज्य बुद्धि फलावह २९ बुद्धिग  
ज्यरमा संपाजि ॥ बुद्धिनरवरवरणनजि ३१ ॥ हयवरगजवर बुद्धि नहि ॥ कल्याणकीर  
तिसूरीवर इं सकहि ॥ ३२ ॥ रा गगोडी दूहा ॥ ॥ श्रणिकराज्य करंतदा ॥ मंत्रिञ्च नय कुं मारः  
वे री जिती वृश करि ॥ कहुं अवरक था मनोदार ३३ ॥ नगरी अयोध्या दिवसि ॥ नरतनाम वित्रकार  
पत्यावती वरदानधी ॥ वित्रलषिं मनोहार २ कला प्रगट करिं आपणी ॥ फरिगो मनय रश्च नावरा  
नरपति मन रजि सदा आव्यो मि धूदश ३ तिहा विशालानगरी प्रचु ॥ वेटक व उर सुजाण सुन  
द्रामही पीपति ॥ मानिं जिन वर आण ४ ॥ तहनि मात सुता मती ॥ प्रियं कारिणी प्रमनि धं न ॥ मृ  
गावती वलि सु प्रना प्रनावती शुचनाम ५ ॥ ज्ये शचेलना चंद नावदना ए स प्रसुता बक्रनेह ३

